# आई .ए. रिचर्ड्स का मूल्य सिद्धांत

**डॉक्टर पूजा असिस्टेंट प्रोफेसर**

**हिंदी विभाग**

**जैन कन्या पाठशाला (पी. जी.) कॉलेज**

**मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश**

पाश्चात्य आलोचना के क्षेत्र में आई ए रिचर्ड्स का एक ऐसा नाम है , जिसने अपनी मौलिक प्रतिभा, चिंतन और अपनी विद्वता का परचम मैं सिर्फ पश्चिमी देशों में बल्कि पूरे विश्व में फहराया है।आलोचना के क्षेत्र में मनोविज्ञान पर आधारित अपने दृष्टिकोण एवं सिद्धांतों के द्वारा उन्होंने विश्व फलक पर अपनी प्रतिष्ठा कायम की। नई समीक्षा के प्रवर्तक रिचर्ड्स ने साहित्य की मनोवैज्ञानिक विवेचना द्वारा पाश्चात्य समीक्षा को एक नौतन दृष्टि प्रदान की।

**मूल्य सिद्धांत की मान्यताएं –**

रिचर्ड्स के मूल्य सिद्धांत की मूल मान्यताएं निम्नलिखित हैं –

ऐसी कोई भी वस्तु मूल्यवान है,जो सामान्य महत्वपूर्ण इच्छा को कुंठित किए बिना किसी इच्छा को पुष्ट करती है।

मूल्य और मूल्य की अनुभूति पर्याय हैं।

मानव मन के आवेगो का तंत्र है। चेतना अवस्था में आवेगो की उत्पत्ति चलती है। आवेग दो प्रकार के होते हैं (क) प्रवृतिमूलक आवेग (ख) निवृत्ति मूलक आवेग

आवेगो की विश्रांति में ही काव्य की महत्ता है मूल्यवत्ता है, आवेग के सामंजस्य पर आधारित सौंदर्य की अनुभूति मूल्यवान होती है।

काव्य कला को सर्वोत्तम रूप प्रदान करने के लिए कवि की मनोवैज्ञानिक अनुभूति के मूल्य की स्थापना सामाजिक दृष्टि से हितकारी होनी चाहिए।

काव्य में भावोत्तेजक भाषा के विशिष्ट प्रयोग से उसके भीतर का परस्पर विरोधी आवेगो का सामान्य यथावत बना रहता है और उसमें मूल्यवान सौंदर्य अनुभूति की जाती है। यही मनोवैज्ञानिक काव्य कला है।

**रिचर्ड्स के मूल्य सिद्धांत की मान्यताओं की व्याख्या** -रिचर्ड्स ने अपनी विश्वविख्यात कृति प्रिंसिपल्स में मूल्य की तीन परिभाषाएं दी है-

१. कोई भी वस्तु, जो इच्छा को संतुष्ट करती है, मूल्यवान है।

२ विभिन्न जटिल रूपों में भावना और इच्छा की संतुष्टि की छमता मूल्य है।

३ ऐसी कोई भी वस्तु मूल्यवान है, जो सामान्य अधिक महत्वपूर्ण इच्छा को कुंठित किए इच्छा को संतुष्ट करती है।

रिचर्ड्स की एक परिभाषा ओं का सार यही है कि जिस वस्तु से हमारी अधिक से अधिक इच्छाओं की संतुष्टि हो सकती है वह सर्वाधिक मूल्यवान है ।

डॉक्टर देवेंद्र नाथ शर्मा रिचर्ड्स के मूल्य संबंधी परी भाषाओं की आलोचना करते हुए लिखते हैं कि इसका अनिवार्य निष्कर्ष यह है कि जो वस्तुएं इच्छापूर्ति में साधक नहीं है, वे मूल्यहीन है।इस दृष्टि से अच्छी और बुरी इच्छाओं में कोई भेद नहीं रह जाता।

रिचर्ड्स के मूल्य सिद्धांत की यह स्थापना है कि मूल्य और मूल्य की अनुभूति में कोई अंतर नहीं है दोनों पर्याय हैं। यही मूल्य की मनोवैज्ञानिक धारणा है। इसी आधार पर मूल्य सिद्धांत प्रतिष्ठित हैं।रिचर्ड्स कहते हैं कि मूल्य के अनेक प्रकार हो सकते हैं आर्थिक ,नैतिक ,धार्मिक राजनैतिक ,संस्कृति इत्यादि।

रिचर्ड्सका मूल्य सिद्धांत इच्छाओं की संतुष्टि पर आधारित है। साहित्य का मूल्य हमारे आवेगो में संगति और संतुलन स्थापित करने में निहित होती है। रिचर्ड्स कहते हैं कि परस्पर विरोधी आवेग संघर्षरत होकर एक दूसरे की संतुष्टि में बाधक बन कर एक दूसरे की निराशा का कारण बन जाते हैं, जो व्यक्ति और समाज के लिए हानिकारक है।

रिचर्ड्स की दृष्टि में वह संतुलन और सामंजस्य श्रेष्ठ है, जिसमें मानवीय संभावनाएं कम से कम नष्ट होती है। रिचर्ड्स के अनुसार वह संतुलन और सामंजस्य दो रूपों में घटित होता है पहला अलगाव दूसरा समाहार के द्वारा। रिचर्ड्सआवेगी विश्रांति में काव्य के मूल्य ता स्वीकार करते हैं। रिचर्ड्स के अनुसार कवि की सुगठित व्यवस्थित और संतुलन मने स्थिति से उदभूत कला भावक की मन स्थिति को उसी रंग में रंग देती है और आवेगो के संघर्ष की विरती से भावक को परम शांति और विश्व शांति की अनुभूति होती है। रिचर्ड्स ने संतुलन के कार्य को सिनेस्थीसीस कहां है।

डॉक्टर भगीरथ मिश्र ने लिखा है कि इस दृष्टि से रिचर्ड्स के मूल्य सिद्धांत को सिनेस्थीसीस का सामंजस्य या संतुलन का सिद्धांत भी कहा जा सकता है।

मूल्य सिद्धांत के अंतर्गत रिचर्ड्स यह मान्यता प्रतिपादित करते हैं कि कोई भी सामंजस्य हो, फिर वह क्षणिक भी क्यों न हो, उसमें हम सौंदर्य अनुभूति पाते हैं।

- रिचर्ड्स के माता अनुसार कलाई संप्रेषण आत्मक क्रियाओं का सर्वोत्तम रूप होती है। कवि के मनोवैज्ञानिक अनुभूति मूल्य की स्थापना काव्य में सामाजिक दृष्टि से हितकर एवं कल्याणकारी होनी चाहिए। रिचर्ड्स का यह भी मत है कि काव्य में कवि के मनोवैज्ञानिक काव्य मूल्य की स्थापना या प्रतिष्ठा हेतु भाव उत्तेजक भाषा वांछनीय है। भावोक्तेजक भाषा के विशिष्ट प्रयोग से ही उसके भीतर का परस्पर विरोधी आवेगो का सामंजस्य यथावत बना रहता है और उसमें मूल्यवान सौंदर्य अनुभूति संभव हो पाती है। रिचर्ड्स की दृष्टि में यही मनोवैज्ञानिक काव्य मूल्य है।
- **मूल्य सिद्धांत की आलोचना –**

रिचड्स के मूल्य सिद्धांत की घोर आलोचना हुई। रिचर्ड्स ने मूल्य की जो परिभाषा दी उसकी आलोचकों ने आलोचना करते हुए कहा कि इच्छाओं की संतुष्टि को मूल्य का एकमात्र आधार माल लेने पर (नैतिक या आचार की गति क्या हो सकती है? यह सहज कल्पना है।डॉ रामचंद्र तिवारी ने रिचर्ड्स की इस मान्यता नैतिकता मात्र व्यवहार कुशलता का नाम है और आचार संहिता इस्ट सिद्धि कि वह सामान्य व्यवस्था है, जिससे किसी व्यक्ति या समाज ने लब्ध किया है ) का खंडन करते हुए कहा कि इस मान्यता को सहज भाव से स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

**धन्यवाद**